P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

1857 का विप्लव और शाहमल

मुदित कुमार,
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
एम0 एस0 एस0 एस0 पी0 जी0 कालेज, रासना
मेरठ

सारांश

1857 की क्रान्ति आधुनिक भारतीय इतिहास में एक अहम स्थान रखती है। इस क्रान्ति का प्रस्फुटन मेरठ से हुआ। इस महान घटना को प्रस्फुटित करने तथा अपने उत्कर्ष तक पहुँचाने में मेरठ एवं आस–पास की ग्रामीण जनता ने अपनी अहम् भूमिका निभायी थी। विदेशी शासन के विरूद्ध इन ग्रामीणों का नेतृत्व स्थानीय नेतृत्वकर्ताओं ने किया।

इनमें शाहमल का नाम उल्लेखनीय है। शाहमल ने 1857 की क्रान्ति के समय पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अवस्थित बागपत जिले एवं इसके निकटवर्ती गाँवों की ग्रामीण जनता को अपना कुशल नेतृत्व प्रदान किया। यद्यपि वे शहीद हो गये परन्तु उनकी शहादत को किसी प्रकार भुलाया नहीं जा सकता।

मुख्य शब्द : क्रान्ति, ग्रामीणों, विप्लव, प्रस्फुटन

प्रस्तावना

विवादास्पद चरबी के कारतूसों की तात्कालिक वजह से 10 मई, 1857 की संध्या में मेरठ में क्रान्ति के प्रस्फुटन के शुरूआती क्षण से ही विप्लवकारी ग्रामीणों की भीड़ ने क्रान्तिकारी सैनिकों के साथ मिलकर क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम दिया था। इस क्रान्तिकारी भीड़ ने मेरठ में लूटपाट एवं यूरोपियनों की हत्या जैसी घटनाओं को अंजाम देकर क्रान्ति को अपने पूर्ण उत्कर्ष तक पहुँचा दिया था।[1] 10 मई को क्रान्तिकारी सैनिकों ने शाम साढ़े छह बजे के लगभग नयी जेल (विक्टोरिया पार्क जिसे अब भामाशाह पार्क के नाम से जाना जाता है) में बन्दी तीसरी अश्व सेना के अपने 85 साथियों को स्वतंत्र करा लिया परन्तु यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि उन्होंने किसी अन्य कैदी को नहीं छुड़ाया था। नयी जेल पर रात्रि दो बजे के लगभग क्रान्तिकारी ग्रामीणों द्वारा हमला किया गया तथा जेल में बन्द समस्त 839 कैदियों को आजाद करा दिया। इतना ही नहीं उसने जेल एवं जेलर के बंगले को लूट कर उसमें आग लगा दी।[2]

वस्तुतः प्रारम्भिक समय से ही क्रान्ति को अपने उत्कर्ष तक पहुँचाने में क्रान्तिकारी ग्रामीणों ने अपनी अहम् भूमिका निभायी थी। ये क्रान्तिकारी ग्रामीण मेरठ के निकटवर्ती गाँवों से सम्बन्धित थे। अर्थात् क्रान्ति के प्रारम्भिक समय से ही मेरठ के समीपवर्ती गाँवों की जनता ने इसमें अपनी सक्रिय भागीदारी निभायी थी।

10 मई की मेरठ की क्रान्ति की खबर सुनकर मेरठ के आसपास के अन्य अधिकांश गाँवों के ग्रामीणों ने भी इसमें अपने स्तर पर भागीदारी निभायी। इनमें गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़, धौलाना, पिलखुवा, मुकीमपुरगढ़ी, असौड़ा, डासना, सीकरी खुर्द, मुरादनगर, खिदौंडा, भनेड़ा कुम्हैड़ा, सुहाना, गयासपुर, परीक्षितगढ़ आदि स्थान मुख्य थे। इसी कड़ी में बागपत एवं बड़ौत के समीपवर्ती गाँवों ने भी अपनी अहम् भूमिका निभायी थी। 1857 ने इन ग्रामों के क्रान्तिकारी ग्रामीणों का नेतृत्व साँवल उर्फ शाहमल ने किया था।

साँवल (शाहमल) बागपत जनपद में अवस्थित बिजरौल गाँव के जाट परिवार से सम्बन्धित थे। बिजरौल गाँव जाट बहुल हैं। साँवल ने 12, 13 मई 1857 से जुलाई, 1857 तक बागपत एवं बड़ौत के समीपवर्ती गाँवों का नेतृत्व किया। इनमें हरचन्दपुर, ननवाकाजिम, नानूहन, बिजरौल, जोहड़ी, बिजवाड़ा, पूठ, धनौरा, बाघूनिरोजपुर, पोइस, ओसख, नादिर असलत आदि गाँव मुख्य थे।[3]

मेरठ में क्रान्तिकारियों ने प्रशासनिक व्यवस्था को अस्तव्यस्त कर दिया था। जिससे चारों ओर अराजकता फैली हुई थी। साँवल ने इस फैली हुई अराजकता को महसूस किया तथा उन्होंने उससे लाभ उठाने की कोशिश की। वे इसमें सफल भी हुए। उन्होनें अपने कुछ साथियों को लेकर 12 मई को बड़ौत में बंजारे व्यापारियों के दल पर हमला किया और उनके साथ लूटपाट की। अगले

ही दिन अर्थात् 13 मई को उन्होंने पुनः उस दल के साथ लूटपाट की घटना को अंजाम दिया।[4] इस लूटपाट से उन्हें काफी सम्पत्ति प्राप्त हुई।

बंजारे दल के साथ लूट से जहाँ एक ओर उन्हें धन की प्राप्ति हुई तो दूसरी ओर उनकी शक्ति में वृद्धि भी हुई। साथ ही साथ, उनके अनुयायियों की संख्या मे भी वृद्धि हुई। अपने विरुद्ध किसी भी प्रकार की पुलिस कार्यवाही न होने के कारण उन्होंने बड़ौत तहसील एवं पुलिस चौकी पर सहसा हमला बोल दिया तथा वहाँ भी अत्यधिक लूटपाट की।[5] यहाँ का तहसीलदार अपनी जान बचाकर भाग खड़ा हुआ।

इन घटनाओं से साँवल का प्रभाव क्षेत्र बढ़ गया और वे अब शाहमल के नाम से जाने जाने लगे। मेरठ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर में भी उनका नाम शाहमल मिलता है। उनमें संगठनकर्ता एवं मुश्किल समय में साहस से सामना करने के गुण विद्यमान थे अपनी इन विशेषताओं के कारण उन्होंने अनेक ग्रामीण क्रान्तिकारियों को अपने नेतृत्व में एकत्रित कर अपने दल का गठन कर लिया। इस दल में सभी जाति के लोग शामिल थे। इनमें ट्योढ़ी के ब्राम्हण, बड़का गॉव के राजपूत, हिलवाड़ी के रूंडेराम पंडित, बाघू निरोजपुर का अचलू गूजर, विलोचपुर का नवीबख्श आदि मुख्य थे।[6] यह इस तथ्य का भी द्योतक है कि 1857 में जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर विभिन्न वर्गों के लोगों ने एक जुट होकर अंग्रेंजी सत्ता के प्रति अपना विरोध प्रदर्शित किया था।

वस्तुतः इस क्षेत्र के ग्रामीणों में अंग्रेंजी सरकार की भूमि सम्बन्धी नीति के कारण रोष व्याप्त था। बेगम समरू की मुत्यु से पूर्व अर्थात् 1836 ई0 तक यह क्षेत्र उनकी जागीर में आता था। परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी जागीर ईस्ट इंडिया कम्पनी के राज्य में मिला ली गयी। परिणामतः यह क्षेत्र भी कम्पनी के अधिकार में आ गया। कम्पनी सरकार ने यहाँ नये प्रकार से भू–राजस्व निर्धारित किया, जिसका मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र से अधिक आय प्राप्त करना था। इसका दायित्व इलियट एवं प्लाउडन को दिया गया। नवीन व्यवस्था में राजस्व की दर अधिक थी। इससे यहाँ के ग्रामीणों में रोष व्याप्त था। जब इनके द्वारा विरोध किया गया तो सरकार ने सख्ती से काम लिया और आदेश पारित किया कि ''यदि कोई किसान समय से राजस्व अदा नहीं करता है तो उसकी जमीन उस दूसरे किसान को दे दी जाएं जो समय से कर की अदायगी कर सकता हो।'' इस नवीन व्यवस्था से अनेक किसानों की जमीन जब्त करके दूसरे किसानों को दे दी गयी। इससे 1840 और 1850 के दशकों में बागपत एवं बड़ौत क्षेत्र के ग्रामीण उत्तेजित हो गये।[7] भूमि जब्त होने वालों में साँवल (शाहमल) का परिवार भी शामिल था। अतः जैसे ही 10 मई को मेरठ में घटित हुई विप्लवकारी घटनाओं की सूचना यहॉ के ग्रामीणों को मिली उन्होनें क्रान्ति उन्मुख व क्रान्तिमूलक घटनाओं को अंजाम देना शुरू कर दिया। शाहमल ने उन्हें संगठित कर लिया।

क्रान्ति के प्रस्फुटन के कुछ समय पश्चात् ही शाहमल अपने कार्यों से बड़ौत एवं बागपत क्षेत्र में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। साथ ही अब उनका उद्देश्य राजनीतिक हो गया क्योंकि वे अपने समस्त कार्यों को मेरठ के क्रान्तिकारी सैनिकों के समान संवैधानिक रूप देना चाहते थे। अतः उन्होंने मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर में अपनी आस्था प्रदर्शित की और दिल्ली के क्रान्तिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया। उन्होंने इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु बिलोचपुरा गाँव के बलूची नवीबख्श के पुत्र अल्लादिया को दिल्ली भेजा। बागपत के नूरखाँ के पुत्र मेहताब खाँ का दिल्ली के क्रान्तिकारियों से सम्पर्क था। उसका विश्वास था कि शाहमल दिल्ली के क्रान्तिकारियों को सहायता पहुँचा सकते हैं। उसने इस तथ्य से उन्हें अवगत भी कराया। बागपत के वजीर खाँ ने भी इसी उद्देश्य से मुगल सम्राट के पास संदेश भेजा।[8] उनकी उपयोगिता को देखते हुए मुगल बादशाह ने उन्हें बागपत एवं बड़ौत क्षेत्र का सूबेदार बना दिया[9] क्योंकि वे बागपत की सीमा दिल्ली से मिली होने के कारण खाने पीने के सामान को वहाँ आसानी से भेज सकते थे। कालान्तर में ऐसा ही हुआ। शाहमल ने जहाँ इस क्षेत्र में प्रशासनिक व्यवस्था को अस्तव्यस्त कर दिया तो वहीं 8 हजार मन अनाज बसौद गाँव में इकट्ठा भी कर लिया ताकि उसे दिल्ली भेजा जा सके।[10]

11वीं पैदल सेना के 125 सैनिक भी उनके साथ आकर मिल गये। इससे उनकी ताकत में और अधिक वृद्धि हो गयी। बसौद के जाटों एवं बिचपुरी तथा अम्हेड़ा के गूजरों ने बड़ौत एवं बागपत में खूब लूटपाट की। शाहमल के साथ मिलकर अम्हेड़ा के गूजरों आदि ने मिलकर हिण्डन पर बने नावों के पुल को तोड़ दिया। इससे दिल्ली का मेरठ, बागपत आदि स्थानों से सम्पर्क समाप्त हो गया। इस प्रकार शाहमल ने दिल्ली पर अंग्रेजों द्वारा पुनः कब्जा करने में बाधा उत्पन्न कर दी।

वे क्षेत्र की ग्रामीण जनता को क्रान्ति में भाग लेने के लिए प्रेरित करते थे। इसके लिए क्रान्तिकारी गुप्त सभाओं का आयोजन किया जाता था। एक ऐसी ही सभा का आयोजन शाहमल एवं बाघू निरोजपुर का अचलू गूजर कर रहे थे। इसकी सूचना दुल्ले गूजर ने अंग्रेंजों को दे दी। अंग्रेंज, शाहमल की क्रान्तिकारी गतिविधियों से अत्यधिक चिंतित थे।[11] उन्होंने यथाशीघ्र मेरठ से खाकी रिसाला भेजा लेकिन शाहमल वहाँ से निकलने में कामयाब रहे। यद्यपि अचलू को पकड़ लिया गया तथा मृत्यु दण्ड दे दिया गया।[12]

एक ओर तो शाहमल ने अंग्रेजों को अपने क्षेत्र से भू–राजस्व उगाहने नहीं दिया वहीं दूसरी ओर उन्होंने 8 हजार मन अनाज बसौद गाँव में इकट्ठा कर लिया। यह बड़ौत एवं बागपत क्षेत्र में उनके प्रभाव का द्योतक था। इस अनाज को वे दिल्ली भेजना चाहते थे। परन्तु इसमें वे सफल न हो सके। अंग्रेजों को इसका पता चल गया। शीघ्र ही अंग्रेंजी सैन्य टुकड़ी बसौद गाँव में जा पहुँची। परन्तु शाहमल यहाँ से भी बचकर निकलने में कामयाब हो गये। अंग्रेंजी सैनिकों ने ग्रामीणों को गाँव से बाहर निकलने के लिए मजबूर कर दिया परन्तु दिल्ली से आये दो गाजी एक मस्जिद में मोर्चा लगाकर लड़ते रहे।[13] परिणामतः अंग्रेंज भी अपनी योजना में सफल न हो सके। शाहमल के सम्बन्ध में मेरठ के एक सैन्य अधिकारी ने लिखा कि 'शाहमल जाट बड़ौत परगने का गवर्नर हो गया

था और इसने अन्य तीन–चार परगनों पर अधिकार करके राजा की उपाधि धारण कर ली थी। दिल्ली के घेरे के समय दिल्ली की जनता और गैरीसन इसी के कारण ही जीवित बची रह सकी।''[14]

शाहमल की क्रान्तिकारी गतिविधियों से अंग्रेज बौखला उठे। उन्होंने शाहमल के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की रणनीति तैयार की थी। खाकी रिसाले के द्वारा उनका पीछा किया गया और बड़ौत के निकट एक बाग में उन्हें चारों तरफ से घेर लिया गया। अंग्रेज सैनिक आधुनिक हथियारों से सुसज्जित थे। इस समय शाहमल के साथ लगभग 7 हजार ग्रामीण क्रान्तिकारी थे। उन्होंने भी मोर्चा सम्भाल लिया।[15] दोनों में आमने–सामने की लड़ाई हुई यद्यपि वृद्ध शाहमल एवं ग्रामीण क्रान्तिकारियों ने बड़े साहस के साथ खाकी रिसाले का सामना किया परन्तु वे अधिक समय तक प्रशिक्षित अंग्रेज सैनिकों के समक्ष टिक न सके और उनमें भगदड़ मच गयी। इस संघर्ष में अनेक क्रान्तिकारी शहीद हुए। इनमें शाहमल भी शामिल थे।[16] जुलाई को मेरठ के उच्च अधिकारियों को इसकी खबर कर दी गयी।[17] शाहमल का सिर धड़ से अलग कर दिया गया। उसे भाले पर टाँग कर चारों तरफ घुमाया गया ताकि क्षेत्र में भय व्याप्त हो जाएं और ग्रामीण क्रान्तिकारी घटनाओं को अंजाम न दे।

अंग्रेजों ने करमअली रांगड़ मुसलमान को ईनाम में बागपत की जागीर दी। ऐसा माना जाता है कि उसने शाहमल का सिर धड़ से अलग किया था और इसी कारण उसे यह जागीर बख्शी गयी थी। बड़ौत की तहसील समाप्त कर दी गयी तथा उसे बागपत तहसील में शामिल कर दिया गया।

इस प्रकार शाहमल शहीद हो गये परन्तु उनकी शहादत को भुलाया नहीं जा सकता। जब तक वे जीवित रहे अंग्रेजो की दिल्ली पर पुनः कब्जा करने की कोशिश कामयाब न हो सकी। साथ ही उन्होंने जहाँ बागपत एवं बड़ौत क्षेत्र से अंग्रेजों के समक्ष भू–राजस्व उगाहने में कठिनाईयाँ पैदा कर दी वहीं दिल्ली के लिए अनाज आदि खाद्य पदार्थों को भारी मात्रा में एकत्र करने में सफलता प्राप्त की थी।

यदि 1857 की क्रान्ति के संदर्भ में दूसरे प्रमुख नायकों की चर्चा की जाएं तो उनमें अधिकांशतः उन घरानों से ताल्लुक रखते थे जो किसी न किसी क्षेत्र विशेष का प्रतिनिधित्व करते रहे थे। अतः जब उन्होंने विदेशी सत्ता के खिलाफ हथियार उठाये तो उक्त क्षेत्र की जनता की सहानुभूति उनके साथ होनी स्वाभाविक ही थी। परन्तु शाहमल एक साधारण किसान परिवार से सम्बन्धित थे। यदि उन्हें स्थानीय जनता के एक बड़े भाग का समर्थन प्राप्त हुआ तो वह उनकी विशेषताओं के कारण था। उन्होने शून्य से उठकर गवर्नर के पद को न केवल हासिल किया वरन् क्रान्ति में स्थानीय नेतृत्वकारी की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उन्हीं के नेतृत्व में बागपत एवं बड़ौत क्षेत्र में ब्रिटिश प्रशासनिक व्यवस्था पूर्णतः ध्वस्त हो गयी थी।

वस्तुतः 1857 की क्रान्ति में शाहमल जैसे क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की भूमिका को उस महान विप्लव के 150 वर्ष से अधिक समय के बाद भी कम ही देशवासी जानते है तो इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि उन अमर शहीदों ने अपने नाम के लिए कुर्बानियाँ नहीं दी थीं। वे तो देश और समाज के कल्याण के लिए उन मूल्यों की रक्षार्थ शहीद हुए थे जिन्हें वे अपने प्राणों से भी अधिक मूल्यवान समझते थे।

निष्कर्ष

10 मई, 1857 में मेरठ से प्रस्फुटित क्रान्ति की सूचना बड़ी तेजी से निकटवर्ती गांवों में फैल गई। क्रान्ति की सूचना पाकर अनेक गाँवों के ग्रामीणजनों ने अपने–अपने तरीके से क्रान्ति में अपनी भागीदारी निभानी शुरू कर दी। इसी क्रम में बागपत व बड़ौत क्षेत्र में क्रान्ति का नेतृत्व साँवल उर्फ शाहमल के द्वारा किया गया।

शाहमल बागपत जनपद के बिजरौल गाँव के किसान परिवार से सम्बन्धित थे परन्तु उनमें उच्च कोटि के नेतृत्वकर्ता के गुण विद्यमान थे। उनकी कुशल नेतृत्व हरचंदपुर ननलाकाजिम, नानूहल, बिजरौल, गौहड़ी, बिजवाड़ा, पूठ, घनौरा, बाघू निरोजपुर, पोइस, नादिर असलत, आदि अनेक गाँवों के ग्रामीणों ने क्रान्ति में भाग लिया। उन ग्रामीणों में अनेक वर्गों के लोग शामिल थे।

साँवल (शाहमल) की उपयोगिता को देखकर ही मुगल बादशाह ने उन्हें बागपत एवं बड़ौत का सूबेदार बना दिया। दिल्ली के क्रान्तिकारियों द्वारा साँवल (शाहमल) की उपयोगिता का आंकलन ठीक ही किया गया क्योंकि एक ओर तो उन्होंने अंग्रेजों को अपने क्षेत्र से भू–राजस्व उगाहने नहीं दिया तथा पूरी प्रशासनिक व्यवस्था ठप कर दी। दूसरी ओर दिल्ली भेजने के लिये उन्होंने आठ हजार मन अनाज बसौद गांव में एकत्र कर लिया। यह उनके कुशल नेतृत्व का ही परिणाम थे। यद्यपि वह अनाज दिल्ली नहीं भेजा जा सका। शीघ्र ही अंग्रेजी सैनिक टुकड़ी के द्वारा उन्हें बड़ौद के निकट एक बाग में चारों ओर से घेर लिया गया। शाहमल के साथ उस समय लगभग सात हजार क्रान्तिकारी ग्रामीण थे। आमने सामने के संघर्ष में ग्रामीण प्रशिक्षित अंग्रेज सैनिकों का सामना न कर सके। उस संघर्ष में अनेक क्रान्तिकारी शहीद हो गये। उनमें शाहमल भी शामिल थे।

अंग्रेजों ने क्षेत्र में भय व्याप्त करने के उद्देश्य से शाहमल का सिर काटकर भाले की नोक पर टांग कर समस्त क्षेत्र में घुमाया। इस प्रकार साँवल उर्फ शाहमल देश के लिये शहीद हो गये।

टिप्पणी एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हमारा मत है कि शाहमल का प्रारम्भिक एवं वास्तविक नाम साँवल रहा होगा। शाहमल उन्हें प्रसिद्धि मिलने के पश्चात् कहा गया होगा क्योंकि उस समय तक 'शाह' शब्द व्यक्ति के उच्च वंशीय होने का द्योतक था अर्थात् शाही वंश से सम्बन्धी व्यक्ति इस शब्द का इस्तेमाल अपने नाम से किया करते थे। जबकि शाहमल एक साधारण किसान परिवार से सम्बन्धित थे। साथ ही साथ डॉ0 एम0एन0 शर्मा ने अपने ग्रन्थ 'सन् सत्तावन का अमर शहीद बाबा शाहमल' में उनके पिता का नाम अमीचन्द, दादा का नाम नत्थन, परदादा का नाम लौतिया, पुत्रों के नाम गरीब, दिलसुख (दिलवा) एवं मेदा उल्लेखित किये। नामावली में नामों की तद्भव एवं तत्सम स्थितियाँ इसी तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करती है। अतः इसे

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता। महामना मालवीय कॉलेज के भूतपूर्व प्राचार्य एवं इतिहासविद् डॉ0 एम0एन0 शर्मा ने शाहमल की वंशावली (भाट की पोथी से) इस प्रकार दी है।

1. विघ्नेश कुमार (सं0) मेरठ के पाँच हजार वर्ष, हस्तिनापुर रिसर्च इंस्टीट्यूट, मेरठ, पृ0 144।
2. पूर्वोक्त, पृ0 152।
3. फ्रोसू: फतहनामा, पाद टिप्पणी 85 बी, 2154–2250। व डॉ0 एम0एन0 शर्मा व डॉ0 आर0 के0 शर्मा : सन् सत्तावन का अमर शहीद बाबा शाहमल, प्रथम संस्करण, भारतीय इतिहास संकलन समिति बागपत, 2002, पृ0 14–15।
4. रवि चन्द्र गुप्ता : इन्हें भुला ना देना, प्रथम संस्करण, मानसी गंगा प्रकाशन, दिल्ली, 2000, पृ0 41–42। ई0 बी0 जोशी (सं0) : उत्तर प्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, मेरठ खण्ड, सातवां संस्करण, 1965, पृ0 141–142।
5. ई0बी0 जोशी : पूर्वोक्त।
6. आचार्य दीपंकर : स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, प्रथम संस्करण, मेरठ 1993, पृ0 141–142।
7. विश्वमित्र उपाध्याय : सन् सत्तावन के भूले–बिसरे शहीद, भाग–2, द्वितीय संस्करण, सूचना और प्रशासन मंत्रालय, दिल्ली, 2001, पृ0 9।
8. डॉ0 एम0एन0 शर्मा व डॉ0 आर0 के0 शर्मा : पूर्वोक्त, पृ0 41।
9. रवि चन्द्र गुप्ता : पूर्वोक्त, पृ0 41–42।
10. डनलप : खाकी रिसाला, पृ0 87–89।
11. रवि चन्द्र गुप्ता : पूर्वोक्त, पृ0 41–42।
12. गुर्जर गौरव, अगस्त–सितम्बर (मासिक),1987, पृ0 29।
13. डॉ0 एम0एन0 शर्मा व डॉ0 आर0के0 शर्मा : पूर्वोक्त, पृ0 15
14. विश्वमित्र उपाध्यायः पूर्वोक्त, पृ0 12
15. रविचन्द्र गुप्ता : पूर्वोक्त, पृ0 41–42 एवं विश्वमित्र उपाध्याय : पूर्वोक्त, पृ0 13
16. वही
17. विश्वमित्र उपाध्याय : पूर्वोक्त, पृ0 13